८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

1

अमरता का रहस्य

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

2

(दृश्य)

पृथ्वी हिल गई। शक्तिशाली झटकों ने पूरे शहर को हिला दिया। दफ्तर की इमारतें गिर गई और घर चकनाचूर हो गए। अस्पताल, पाठशालाएँ और गिरजाघर सब नाश हो गए।

फरवरी २००१ को एलसालवेडोर में जो भुईडोल आया था उसमें लगभग तीन हजार लोगों की मृत्यु हो गयी। हजारों लोग बेघर हो गए। आपातकाल में सहायता करने वालों ने घायलों को ढूढ़ने में दिन रात एक कर दिया। उन्हें केवल कुछ लोग ही जीवित मिले । चार दिनों तक लगातार खोदने के बाद, वे अपनी खोज बन्द करने की तैयारी कर ही रहे थे जब किसी ने उस ध्वंस इमारत के ढेर के बीच में किसी एक आधे दबे हुए हाथ को देखा। उसने सब को और भी चौंका दिया जब वह हाथ थोड़ा सा हिला । बचाने वाले कर्मचारी ने गंभीरता से खोदा उन्हें उस अधेड़ उम्र के व्यक्ति को उस अवशेष में से निकालने के लिए लगभग चार घंटे लगे । वह बिना भोजन या पानी के चार दिन तक जीवित रहा ।

उसका उत्तर था, "मैं जीना चाहता था। मैं मरना नहीं चाहता था। मुझे विश्वास था कि सहायता अवश्य आयेगी। "

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

3

हम जीने की इस इच्छा के साथ पैदा हुए थे। यह आपके और मेरे पास थी जब हमने इस दुनिया में प्रवेश किया। यह सम्भवतः हमारी सबसे अधिक दृढ़ इच्छा है और हम सब में समान रूप से पाई जाती है।

4

जब एक मानव जीवन पर खतरा आता है, तो लोग उसे बचाने के लिए असम्भव, साहसपूर्ण सीमाओं तक जाते हैं।

चाहे यह खतरा कुएं में गिरे एक बच्चे का हो या समुद्र में फंसे जहाज पर सवार लोगों का।

5

या एक खतरनाक पहाड़ी पर असहाय व्यक्ति का या भुईडोल से टूटी इमारतों के ढ़ेर में फंसे हुए घायल लोगों का।

जब भी किसी का जीवन नाश होने पर हो, तब लोग उसे बचाने के लिए दौड़ते हैं।

6

तब भी इस सच्चाई के बारे में हम में से कोई भी नहीं सोचना चाहता कि हमारा जीवन खतरे में है।

और केवल खतरा ही नहीं। हम सबकी मृत्यु निश्चित है।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

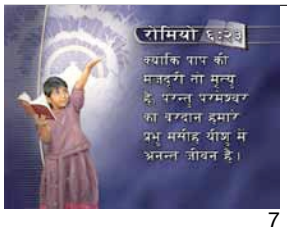

7

(मूलपाठ : रोमियो ६ : २३)

बाइबिल कहती है : "क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।"

रोमियो ६ :२३

8

पाप जहरीला और प्राण घातक है। क्यों?

क्योंकि वह हमें समस्त जीवन के स्रोत से जो स्वंय परमेश्वर है - अलग करता है। और हम सब ने पाप किया है।

9

(मूलपाठ : रोमियो ३ : २३)

"इसलिये कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।"

रोमियो ३ : २३

10

(मूलपाठ : रोमियो ३ : १० - १२)

"..... कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं।

11

कोई समझदार नहीं; कोई परमेश्वर का खोजने वाला नही।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

12

"सब भटक गए हैं..... कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं।"
रोमियो ३ : १० -१२

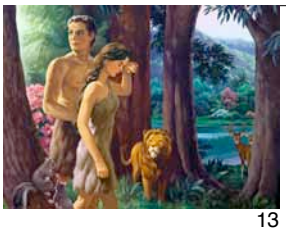
13

हमारे मूल माता -पिता, आदम और हव्वा ने, जिनके द्वारा सारी मानव जाति आई, परमेश्वर की आज्ञा ना मानकर अपने आप को उससे अलग कर लिया।

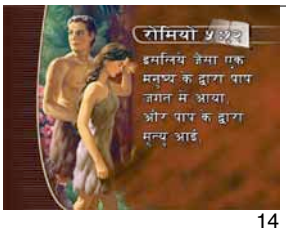

14

(मूलपाठ : रोमियो ५ : १२)
"इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई,

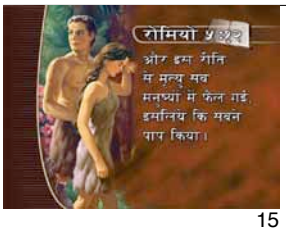

15

और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिये कि सबने पाप किया।"
रोमियो ५ : १२

16

पाप का प्राकृतिक परिणाम मृत्यु है।
पाप से उत्पन्न मृत्यु का औसत १०० प्रतिशत है।
आदम पाप के कारण मरा।
और हम सब जो उस से उत्पन्न हुए हैं इस में हम में से प्रत्येक सम्मिलित हैं।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

17

अतः हम सब गड्ढ़े में गिरने वाले हैं।

जाल में फंसे हुए और असहाय हैं।

मरने के अधिकारी हैं जब तक हमें कोई न बचाए।

बुरा समाचार यह है कि हम मृत्यु के अधिकारी हैं जब तक हमें कोई न बचाए। अच्छा समाचार यह है कि हमें बचाने वाला कोई हैं!

18

(मूलपाठ : इफिसियो २ : ८ -९)

"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है,

19

और न कर्मो के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।"

इफिसियो २ : ८, ९

हाँ, हम सब ने पाप किया है।

इसमें कोई शक नहीं है !

प्रत्येक स्वार्थी कार्य, शब्द या सोच से भी हम पाप करते हैं।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

20

प्रत्येक दिन हम जो अनगिनत बार पाप करते हैं उसके विषय में सोचिए !

और हमारी परेशानी केवल यह नहीं है कि हमने पाप किया है – सच्चाई यह है कि हम पापी हैं !

21

एक इंसान जिसे प्राणनाशक बीमारी हो वह अपनी परेशानी को ना पहचान सके या यदि वह चिकित्सा की मदद न ले तो वह मर जाएगा। और यह उन पापियों का भाग्य है जो अपनी धार्मिक स्थिति को पहचानने में असमर्थ हो जाते हैं और मदद के लिए नहीं पुकारते।

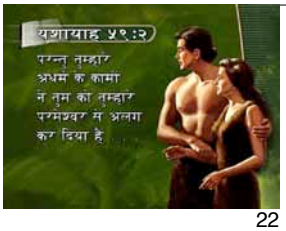

22

(मूलपाठ : यशायाह ५९: २)

"परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है।"

यशायाह ५९ : २

परमेश्वर सम्पूर्ण जीवन का स्रोत है, और जब आदम ने पाप किया, वह मरना शुरू हो गया।

हम सब मृत्यु की सजा के अन्तर्गत है। परन्तु प्रेम के परमेश्वर ने हमें बिना मोक्ष की आज्ञा दिये पाप का परिणाम नहीं बताया है !

यह एक अच्छा समाचार है !

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

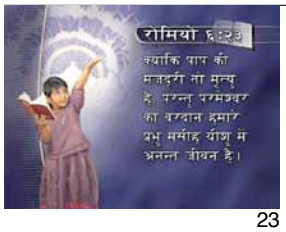

23

(मूलपाठ : रोमियो ६ : २३)

"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।"

रोमियो ६ : २३

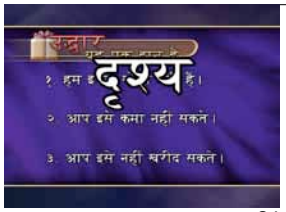

24

(दृश्य)

उद्धार एक दान है।

हम इसके योग्य नहीं हैं।

ना ही हम इसे अपने अच्छे कार्यों के द्वारा कमा सकते हैं, और हम इसे किसी भी कीमत पर खरीद नहीं सकते।

25

बहुत से लोग यह विश्वास रखते हैं कि मनुष्य अच्छे कार्यों को करने के द्वारा क्षमा और अनन्त जीवन प्राप्त कर सकते हैं।

लोग नोकीले कांटो के बिस्तरों पर बैठते हैं, वे यह विश्वास करते हैं कि अपने शरीरों को कष्ट पहुँचाने से वे परमेश्वर का समर्थन कमा सकते हैं।

26

कुछ लोग अपने शरीरों को कोड़े और चेन से मारते और आघात पहुँचाते हैं, दूसरे लोग नोकीले हुक से अपने आप को छेदते हैं, और

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

27

कुछ लोग नंगे पैर गर्म कोयले पर चलते हैं शरीर के अनोखे असामान्य कार्यों के द्वारा स्वर्गीय समर्थन की अभिलाषा करते हैं।

28

दूसरे यह विश्वास करते हैं कि मन्दिरों को बनाने या धर्मी पुरुषों को भोजन करवाने से वे भविष्य के जीवन के लिए श्रेष्ठता प्राप्त कर सकते हैं,

29

और कुछ दूसरों के लिए, परमेश्वर का समर्थन प्राप्त करने के लिए मक्का की यात्रा करना या इस्लाम की रक्षा के लिए मर जाने के अतिरिक्त कोई अन्य बड़ी खुशी या अन्य कोई रास्ता नहीं है।

30

बहुत से मसीही बिना सोचे समझे ऐसा ही करते हैं। वे गिरजाघर जाते हैं, दान देते हैं और बाईबिल के सुनहरे नियम को मानते हैं। वे यह सोचते हैं कि उन्होंने परमेश्वर का समर्थन प्राप्त कर लिया है और इस प्रकार अनन्त जीवन के भागी हो गए हैं। परन्तु क्या यह सम्भव है?

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

31

क्या मनुष्य शारीरिक दण्ड, मानसिक वेदना या दयालुता के कार्य करने के द्वारा रिश्वत देकर परमेश्वर को कह सकता है कि उसके पाप क्षमा किए जाएँ और उसे अनन्त जीवन मिले?

32

क्या हम उस प्रकार उद्धार को प्राप्त कर सकते हैं जिस प्रकार कोई खेल में ट्रॉफी या सोने का पदक जीतता है?

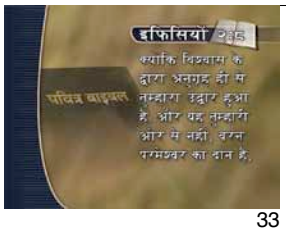

33

(मूलपाठ : इफिसियो २ : ८,९)

बाइबिल कहती है : "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है,

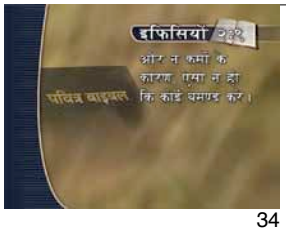

34

और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।"

इफिसियों २ : ८, ९

35

हम अपने कर्मों के द्वारा अपने आप को नहीं बचा सकते हमें परमेश्वर के अनुग्रह और उसके प्रेम और उसके समर्थन पर निर्भर रहना चाहिए, जिन्हें वह हमें मुफ्त में देता है।

यदि हम उद्धार को कमा सकते, तो यह दान नहीं होता।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

36

मान लो कि आप को नौकरी देने वाला आपको एक लिफाफा देता और कहता कि उस के पास आप के लिए एक उपहार है।

37

यदि आप उस के अन्दर बीते हुए दो सप्ताह के वेतन चैक को पाते हैं, तो क्या वह उपहार होगा?
यदि आप ने उसे कमाया है तो नहीं !

38

परन्तु समस्त विश्व पर शासन करने वाला सर्वशक्तिमान परमेश्वर क्यों

39

(दृश्य)
उन लोगों के साथ संबंध रखे जो अन्तरिक्ष के कोने पर इस गृह पर बसते हैं?क्यों उसने स्वार्थी राजद्रोही मनुष्य को पूर्णरुप से परित्याग नहीं कर दिया और पाप के परिणाम को सहने के लिए छोड़ दिया?

40

(मूलपाठ : १ यूहन्ना ४ : ८)
".....परमेश्वर प्रेम है।"
१ यूहन्ना ४ : ८

41

आप में से कुछ माता -पिता हैं।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

42

और आप में से कुछ जानते हैं कि जब एक बच्चा बीमार हो जाता है और दिन रात रोता रहता है तो कैसा लगता है। आप उसे चुप कराने के लिए हर सम्भव प्रयत्न करते हैं, परन्तु उससे कोई मदद नहीं मिलती। आप फर्श पर चलते हैं, बच्चे को गाना सुनाते हैं और अपने मित्रों के द्वारा दिए गए सभी परामर्शों का प्रयोग करते हैं, परन्तु कुछ भी काम नहीं आता। परन्तु मैं आप से कुछ पूछता हूँ आप चाहें कितना भी थक चुके हों, चाहें बच्चा कितनी देर तक बीमार हो, इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता, क्या आप कभी उस बच्चे को किसी को दे देने की सोच भी सकते हैं? या उसे अकेले भुगतने के लिए छोड़ सकते हैं?

43

नहीं ? क्यों ? क्योंकि आप उस असहाय छोटे बच्चे से प्रेम करते हैं और इसलिए भी क्योंकि उस बच्चे को दुःख और दर्द भोगना है।
परमेश्वर भी ऐसा ही है।!

44

इस पृथ्वी ग्रह पर उसके बच्चे पाप की बिमारी से बिमार हो गए थे,

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

45

और उसके कारण जो दुःख और दर्द वे भोग रहे है केवल इसके कारण परमेश्वर उनसे और अधिक प्रेम करता हैं।

46

परमेश्वर ने कभी हमसे दूर जाना पसन्द नहीं किया ! उसने हमें मरने के लिए और हमारे राजद्रोह के परिणामों को भोगने के लिए कभी भी नहीं छोड़ा।

47

(मूलपाठ : २ पतरस ३ : ९)

बाइबिल कहती है: "प्रभु-------तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि नाश हो, वरन यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले।"

२ पतरस ३ : ९

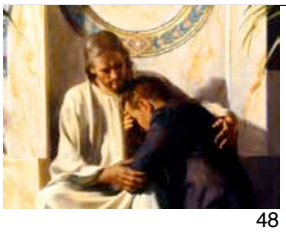

48

चाहे आप कितने भी अच्छे या बुरे हो इस पर विचार किए बना, परमेश्वर आपसे प्रेम करता है और आप को बचाना चाहता है। वह यह नहीं चाहता कि आप मर जाएं।

49

तब भी, हम सब ने पाप किया है।

हम सब ने परमेश्वर के विरुद्ध राजद्रोह किया है और उसके नियम को तोड़ा है।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

50

दुनिया की सरकारें बिना नियम कानून के अधिक समय तक नहीं चल सकतीं।

51

नियम तोड़ने वालों को दण्डित किया जाता है। परन्तु परमेश्वर का नियम तोड़ना और भी गम्भीर बात है, क्योंकि पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है- केवल वहीं है जो हमारी मदद कर सकता है और हमें बचा सकता है !

52

यहाँ तक कि परमेश्वर अनन्त प्रेम का परमेश्वर है, वह न्याय का परमेश्वर भी है।
सीने पर्वत पर उसने अपने विषय में वर्णन किया :

53

(मूलपाठ : निर्गमन ३४: ६, ७)
"-----यहोवा, ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करुणामय और सत्य,

54

हजारों पीढ़ियों तक निरन्तर करुणा करने वाला, अधर्म और अपराध और पाप का क्षमा करने वाला, परन्तु दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा।"
निर्गमन ३४ : ६, ७

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

55

क्या इसका कोई हल नहीं है? इससे बाहर निकलने का रास्ता नहीं है?

हाँ बाहर निकलने का एक रास्ता है !

प्रेमी परमेश्वर ने हमें बचाने के लिए और फिर भी न्यायी रहने के लिए एक रास्ता ढूंढ़ा है।

56

उसने मरने के लिए एक सिद्ध प्रतिनिधि ढूंढ़ा है, जो हमारे पापों का दण्ड चुकाता है ताकि हम जीवित रह सकें।

यूहन्ना, जो प्यारा शिष्य था, इस प्रकार व्याख्या करता है:

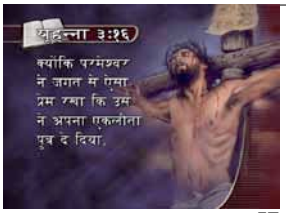

57

(मूलपाठ : यूहन्ना ३ : १३)

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया,

58

ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।"

यूहन्ना ३ : १६

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

59

यीशु एक मनुष्य की तरह पृथ्वी पर रहने के लिए आये, उन्होंने उन्हीं कठिनाईयों और परिक्षाओं का सामना किया जिस प्रकार
प्रत्येक प्राणी ने सामना किया।
उन्होंने एक सिद्ध आज्ञाकारी मनुष्य का जीवन व्यतीत किया। फिर, मानव जाति के लिए एक पाप रहित प्रतिनिधि के रूप में, मसीह ने प्रत्येक व्यक्ति का पाप स्वेच्छा से अपने ऊपर ले लिया और उन के बदले मर गये

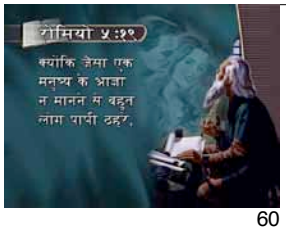

60

(मूलपाठ : रोमियो ५ : १९)
पौलुस ने लिखा : "क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे,

61

वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे।"
(रोमियो ५ : १९)

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

62

यीशु की मृत्यु किसी भी अर्थ पूर्ण अभिप्राय से क्रोधित परमेश्वर को संतुष्ट नहीं करती थी। हमारे पापों से हमें बचाने के लिए यीशु मरने के लिए तैयार हो गये, और परमेश्वर हमसे इतना प्रेम करता था कि वह हमारे लिए अपने एकलौते पुत्र का बलिदान देने के लिए तैयार हो गया। यीशु परमेश्वर का मेम्ना था, बलिदान किया जाने वाला मेम्ना।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

63

(दृश्य)

जिस प्रकार परमेश्वर के चुने हुए लोग, इस्त्राएली, मूसा के द्वारा मिश्र से छुड़ाए जाने के बाद सीने पर्वत के पास जंगल में इधर -उधर घूमते थे, वे प्रतिदिन पाप में गिरे हुए मनुष्य को बचाने की परमेश्वर की योजना के दृष्टांत चित्र को, चिन्हों और पर्वो के द्वारा देखते थे। वह मरुस्थल में बनाया गया तम्बू रूपी मंदिर, जो परमेश्वर के विशिष्ट निर्देश के द्वारा बनाया गया था जहाँ पर परमेश्वर के द्वारा स्थापित उपासना सभाएँ होती थीं, उसने निरंतर मनुष्य का ध्यान भविष्य की कलवरी की ओर आकर्षित किया उस पर्वत के शिखर पर जहाँ यीशु मरेगा, जहाँ सच्चा मेम्ना समस्त मनुष्य जाति के पापों के लिए बलिदान किया जाएगा, जो सब को क्षमा और उद्धार की आशा और आश्वासन दे रहा है।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

64

पापी बलिदान करने वाला पशु लेकर आता था। वह उस के सिर पर अपना हाथ रखता था और अपने पाप का अंगीकार करता था।

उसके बाद वह चाकू लेता था और उसका बलिदान कर देता था, यह इस बात की ओर संकेत था कि उसके पाप उस बलिदान किए जाने वाले मेम्ने की मृत्यु का कारण बने –जो यीशु को दर्शाता था।

65

अप्रिय, हाँ। परन्तु कलवरी पर वह क्रूस जो मानव प्राणी के हृदय में अनन्त जीवन का आश्वासन लाया था वह और भी अधिक अप्रिय था। तब भी, परमेश्वर ने इस कार्य के द्वारा यह दर्शाया कि पाप पापी के लिए मृत्यु लाता है या फिर निर्दोष (मेम्ने) के लिए बलिदान।

66

बाईबिल में परमेश्वर के लोग उस समय बलिदान करके परमेश्वर के पुत्र की होने वाली मृत्यु में अपने विश्वास को दिखाते थे, जो मनुष्य के स्थान में मरेगा।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

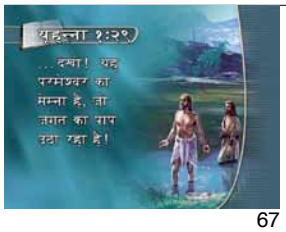

67

(मूलपाठ : यूहन्ना १ : २९)

यीशु सच्चे मेम्ने थे जब यीशु बपतिस्मा लेने के लिए आये यूहन्ना ने कहा, "---- देखो यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है।" कितनी व्यंगात्मक बात है कि जिन्हें वह बचाने आया था उन्होंने ही उसके जीवन को लेने की योजना बनाई। यीशु मारे गये, ठट्ठों में उड़ाया गया उसे क्रूस पर चढ़ाने की आज्ञा दी गई जो सबसे बुरी कानूनी आज्ञा दी गई।

68

(मूलपाठ : १ पतरस २ : २२)

यहाँ तक की बाइबिल कहती है कि "न तो उस ने पाप किया, और न उस के मुंह से छल की कोई बात निकली" वह क्रूस पर चढ़ाया गया!

१ पतरस २ : २२

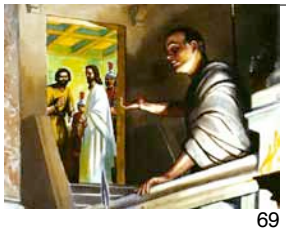
69

फसह के मौसम में मसीह क्रूस पर चढ़ाये गये। उस मौसम में रोमी शासकों की यह रीति थी कि वे अच्छा विश्वास दिखाने के लिए एक अपराधी को छोड़ देते थे। भीड़ ने बरअब्बा को चुना और उसके बदले में यीशु को मरने दिया।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

70

मृत्यु में, यीशु पापियों के साथ पहचाने गये। उन्हें दो ड़ाकूओं के बीच में कूस पर चढ़ाया गया!

और इस प्रकार परमेश्वर ने समस्त संसार के पापों को उसके ऊपर डाल दिया,

71

(मूलपाठ : मत्ती २७ : ४६)

उसने बड़े शब्द से पुकार कर कहा, "----हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?"

मत्ती २७ : ४६

उन्होंने पाप के द्वारा लाये गये भयानक अलगाव को महसूस किया। मसीह अपने पिता से अलगाव के गहरे दर्द को सहन नहीं कर सकते थे। इससे उनका हृदय टूट गया!

72

(मूलपाठ : मरकुस १५ : ३१)

भीड़ चिल्लाई "---इस ने औरों को बचाया, और अपने को नहीं बचा सकता।"

मरकुस १५ : ३१

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

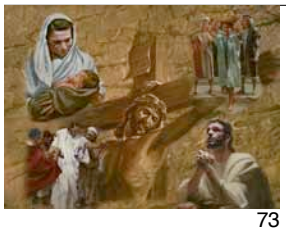

73

और यह सच था! वह अपने -आप को नहीं बचा सके और फिर भी दूसरों को बचाया। वह परमेश्वर ही था, जिसने खोई हुई जाति के लिए, टुटे हुए नियम और पाप की मजदूरी का मूल्य चुकाया। इस प्रकार वह परमेश्वर ही थे, जिन्होंने उस प्रेम के साथ जो तब तक संतुष्ट नहीं होता जब तक मनुष्य के बदले, उसके प्रतिनिधि के रूप में अपना पुत्र मरने के लिए ना दे दिया।

74

यीशु के साथ ऐसा व्यवहार किया गया जिसके हम योग्य थे ताकि हमारे साथ ऐसा व्यवहार किया जाए जिसके वह योग्य है। वह हमारे पापों के लिए दण्ड़ित किये गये और उन्होंने हमारी मृत्यु को सहा ताकि हम अनन्त जीवन को प्राप्त कर सकें। इस प्रकार से परमेश्वर हमें अनन्त जीवन दे सके और अब भी न्यायी रहे। इसलिए नहीं कि हमने कोई अच्छा कार्य किया था, परन्तु इसलिए ताकि परमेश्वर मसीह के कार्य का और उसके सिद्ध जीवन का श्रेय हमें दे सके।

75

(मूलपाठ : इफिसियों २ : ८)

पौलुस ने, अन्य जातियों से कहा :– "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह से ही तुम्हारा उद्धार हुआ है---" यह विश्वास ही उद्धार का रास्ता है।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

76

जब फिलिप्पी जेलर ने पौलुस से पूछा कि उद्धार पाने के लिए उसे क्या करना चाहिए, पौलुस ने उत्तर दिया,

77

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम १६ : ३१)

"प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू उद्धार पाएगा"

प्रेरितों के काम १६ : ३१

78

तब भी, केवल इस बात से सहमत होना कि मसीह का इस पृथ्वी पर रहना ही पर्याप्त नहीं है। वह बचाने वाला विश्वास नहीं है। इसमें उससे भी अधिक और है।

79

(मूलपाठ : याकूब २ : १९)

बाइबिल कहती है कि "दुष्टात्मा भी विश्वास रखते, और थरथराते हैं।"

याकूब २ : १९

80

यीशु में विश्वास रखने का अर्थ १९०० वर्ष पूर्व हुई उसकी मृत्यु को स्वीकार करने से भी अधिक है।

बाइबिल कहती है,

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

81

(मूलपाठ : नीतिवचन ३ : ५, ६)

"तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना;

82

उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा।"

नीतिवचन ३ : ५, ६

क्या आप उस पर भरोसा रखते हैं? क्या आप वास्तव में उस पर भरोसा रखते हैं?

83

उद्धार करने वाला विश्वास मसीह के बलिदान में विश्वास करना है कि हमने जो पाप किए थे उन्हें उसके बलिदान ने पूर्णरूप से और पूरा मूल्य देकर चुका दिया है।

इसका अर्थ यह विश्वास करना है कि हम जो कर सकते हैं वह हमें नहीं बचाता है, परन्तु वह जो मसीह ने हमारे लिए कलवरी पर किया था।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

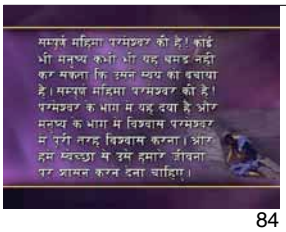

84

कोई भी मनुष्य कभी भी यह घमंड नहीं कर सकता कि उसने स्वयं को बचाया है। सम्पूर्ण महिमा परमेश्वर की है ! परमेश्वर के भाग में यह दया है और मनुष्य के भाग में विश्वास परमेश्वर में पूरी तरह विश्वास करना। और हमें स्वेच्छा से उसे हमारे जीवनों पर शासन करने देना चाहिए।

85

उद्धार पाना बहुत आसान है, फिर भी कितने उसे बहुत कठिन और पेचीदा बना देते हैं।

वह प्रश्न जिसका हमें उत्तर देना चाहिए यह वही प्रश्न है जो फिलिप्पी जेलर से किया गया था जब उसने पौलुस और साइलस को उस भयानक रात में पूछा था जब भुईड़ोल ने जेल के दरवाजों को खोल दिया था :

86

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम १६ : ३०)

"उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूं?"

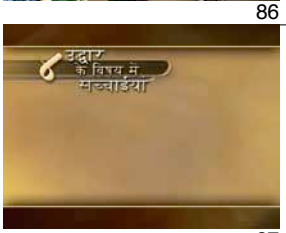

87

उद्धार के विषय में केवल चार सच्चाईयाँ हैं जिनके विषय में जानने की आप को आवश्यकता है। ताकि आप बचाए जाएं।

केवल चार।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

88

(मूलपाठ : इफिसियो २ : ८ ,९)

सच्चाई १ : उद्धार एक मुफ्त दान है।

"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है, न कर्मों के कारण ऐसा न हो कि कोई घमंड करे।"

इफिसियो २ : ८ ,९

अब यह है प्रश्न कि "ऐसा क्यों है कि उद्धार को एक मुफ्त दान क्यों होना चाहिए इसका कारण हमें सच्चाई नम्बर दो से पता चलता है।

89

(मूलपाठ : रोमियो ३ : २३)

सच्चाई -२ : हम सब ने पाप किया है।

रोमियो ३ : २३ कहता है, "इसलिये कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।"

90

इसका अर्थ है कि मैं इस दान के योग्य नहीं हूँ। मैं उद्धार के योग्य नहीं हूँ।

आप देखिए, मैंने पाप किया है।

मैं परमेश्वर की महिमा से रहित हुआ हूँ।

यदि उद्धार पाना मेरी अच्छाईयों पर निर्भर होता, तो मैं उसे कभी नहीं कमा सकता, क्योंकि मैंने पाप किया है -मैं कभी भी पर्याप्त रूप से अच्छा नहीं हो सकता। यर्थाथ रूप से यही कारण है कि क्यों उद्धार को तब एक मुफ्त दान होना चाहिए, जो मुझे मुफ्त में दिया गया है, क्योंकि मैं उसे कमा नहीं सकता और मैं उस के योग्य नहीं हूँ।

हम सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

91

(मूलपाठ : रोमियों ६ : २३)

- सच्चाई -३ : यह समस्या : पाप का अर्थ मृत्यु है।

रोमियो ६ : २३

"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है।"

यह सबसे बडी समस्या है जिसका हम सामना करते हैं। मैं एक पापी हूँ; इसलिए मैं मृत्यु का अधिकारी हूँ। मैं उद्धार पाने के दान के योग्य नहीं हूँ।

मैं उस मुफ्त दान के योग्य नहीं हूँ। इसलिए ही इसको मुफ्त दान होना आवश्यक है, आप ने देखा, क्योंकि हम सबने पाप किया है और हम सब परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।

समस्या यह है कि एक पापी की तरह मैं मृत्यु का अधिकारी हूँ। परन्तु परमेश्वर के पास इस समस्या का समाधान है।

92

(मूलपाठ : रोमियो ५ : ८)

सच्चाई -४ : यह समाधान : यीशु हमारे लिए मरा।

रोमियो ५ : ८ कहता है, "परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।"

क्या ही सुन्दर बात है? यीशु मुझ पापी के लिए मरा। और मित्र, वह आप के लिए भी मरा !

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

93

चार सरल सच्चाईयाँ।

आइए इन का पुर्ननिरिक्षण करते है :

94

१. उद्धार एक मुफ्त दान है।

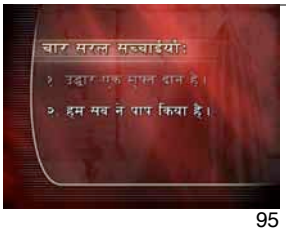

95

२. हम सब ने पाप किया है।

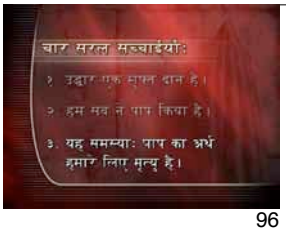

96

३. यह समस्या : पाप का अर्थ हमारे लिए मृत्यु है।

97

४. यह समाधान : यीशु हमारे लिए मरे, जिसका अर्थ हमारे लिए जीवन है यदि हम उसे अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार करते हैं।

98

जब हम पापी थे, यीशु हमारे लिए मरा। मेरे दोस्तों, क्या आप उससे प्रेम नहीं करते क्योंकि वह आपके और मेरे पापों के लिए मरा?

क्या आप उससे प्रेम नहीं करते क्योंकि उसने हमें उद्धार का मुफ्त दान दिया?

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

99

अब आप यह पूछ सकते हैं, "किस प्रकार मैं उस मुफ्त दान को स्वीकार कर सकता हूँ?"

100

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य ३ : २०) बाइबिल इसका उत्तर हमें प्रकाशितवाक्य ३ : २० में देती है

"...देख, मैं द्वार पर खडा हुआ खटखटाता हूं"

यदि कोई व्यक्ति जिस के पास अनन्त जीवन है आपके घर के द्वार पर खडा हुआ खटखटाता है, तो क्या आप उसे बाहर ही छोड देते हैं या उसे अन्दर आने का निमंत्रण देते हैं?

101

वास्तव में, दरवाजा खोलकर उन्हें अन्दर आने का निमंत्रण देंगें! आप देखिए, यीशु को प्राप्त करने के द्वारा हम उस के द्वारा, लाए गए अनन्त जीवन के उपहार को प्राप्त करते हैं।

क्या यह सुन्दर नहीं है?

यीशु हमारे जीवन में आना चाहता है।

हम उसे अन्दर आने के लिए निमंत्रण दें।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

102

इस प्रकार हम उस मुफ्त दान को स्वीकार करते हैं।

हम साधारण रूप से यह कहते हैं "यीशु तेरा धन्यवाद हो!

मेरे जीवन में आओ।

मेरे हृदय में आओ।

मेरे जीवन को नियंत्रित करो, मेरे हृदय को नियंत्रित करो।"

और जब यीशु अन्दर आ जाते है, हमें उन्हें अपने मित्र, अपने उद्धारकर्त्ता और अपने प्रभु व स्वामी के रूप में ग्रहण करना चाहिए।

103

दो महत्वपूर्ण घटनाएँ होती हैं जब हम यीशु को अपने हृदयों में आने के लिए कहते हैं - जब हम अपने जीवन में उसे ग्रहण करते हैं।

104

(मूलपाठ : १. यूहन्ना १ : ९)

सबसे पहले हम अपने पापों को स्वीकार करें और उसके क्षमादान को ग्रहण करें

"यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और विश्वासयोग्य है

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

105

और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य है।"

१. यूहन्ना १ : ९

मित्रों, यह एक सुन्दर प्रतिज्ञा है।

106

यह महत्व नहीं रखता कि हमने क्या किया या हम कहाँ थे, यह भी महत्व नहीं रखता कि हमारा जीवन किस प्रकार का था हम किस प्रकार जीते थे, यहाँ तक कि हम अत्यधिक भयंकर पापी थे हम यीशु के पास आ सकते हैं और उद्धार के मुफ्त दान को ग्रहण कर सकते हैं। अपने पापों को स्वीकार कर सकते हैं और पूरी तरह से और सम्पूर्ण पापों की क्षमा प्राप्त कर सकते हैं।

107

बाइबिल हमें बताती है कि यीशु ने समुद्र की गहराई में जाकर हमारे पापों का मूल्य चुका दिया है, ताकि हम उसे दोबारा याद न करें।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

108

मेरे मित्रों जब यीशु क्षमा कर देता है तो वह सब कुछ भूल जाता है।

क्या कोई ऐसा पाप है जिसे आप ने परमेश्वर के समक्ष स्वीकार किया है तो भी आप अब तक अपराधी हैं और अपराध के भार से दबे हैं हो सकता है कि आप यह अनुभव करते हैं कि कुछ पाप हैं जो परमेश्वर के लिए क्षमा करने के लिए बहुत बड़े हैं।

परमेश्वर ने जो कहा है हमें उस पर विश्वास करना चाहिए।१. यूहन्ना ५ : १० में ये शब्द स्पष्ट कर देता हैं कि यदि हम परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते हैं तो हम उसे झूठा ठहराते हैं।

109

(मूलपाठ : १. यूहन्ना ५ : १०)

"जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है, वह अपने ही में गवाही रखता है;

110

जिसने परमेश्वर की प्रतीति नहीं की, उस ने उसे झूठा ठहराया,

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

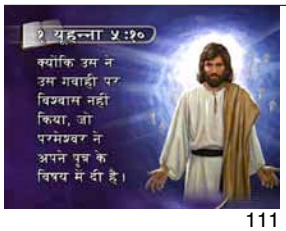

111

क्योंकि उस ने उस गवाही पर विश्वास नहीं किया, जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में दी है।"

१. यूहन्ना ५ : १०

जब यीशु यह प्रतिज्ञाएं करते हैं कि वह हमारे पापों को क्षमा कर देगें और हमारे अपराधों को दूर कर देगें, तो वह वैसा ही करेगें जैसा वे कहते हैं।

112

जब यीशु क्षमा करते हैं, वह भूल जाते हैं। और हमें भी भूल जाना चाहिए!

113

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम ३ : १९)

प्रेरितों के काम ३ : १९ में पतरस के शब्दों में "इसलिये, मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाए...."

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

114

आप देखते हैं, हम यीशु के पास आते हैं, हम मुफ्त उद्धार के दान को स्वीकार करते हैं, हम उसे अपने जीवनों में आने का निमंत्रण देते हैं, और सब से प्रथम बात जो घटती है वह यह है कि वे हमें क्षमा करते और हमें साफ करते व हमें धोते हैं और हमारे पापों को समुद्र की गहराईयों में डाल देते हैं।

मेरे मित्रों क्या यह सुन्दर नहीं हैं?

क्या आप अपने और मेरे उद्धारकर्त्ता से प्यार नहीं करते?

परन्तु कुछ अन्य बात भी हैं जो घटती है जब हम उनको अपने हृदय में आने के लिए निमंत्रण देते हैं।

115

वे हमें पापों पर विजय प्राप्त करने की शक्ति देते हैं। कि हम अधिक से अधिक उस की तरह बन जाए और उसके पदचिन्हों पर चलें।

चोर अब चोरी नहीं करता है।

झूठ बोलने वाला अब झूठ नहीं बोलता।

शराबी अब शराब नहीं पीता है।

116

(मूलपाठ : यूहन्ना १ : १२)

यूहन्ना १ : १२ में : "परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया,

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

117

उन्हें जो उस के नाम पर विश्वास रखते है।"

वह हमें उसके बच्चे, उसकी पुत्री, उसके पुत्र बनने की शक्ति देगें।

अब हम शैतान के अधिकार में नहीं हैं।

अब हम अंधकार की संतान नहीं हैं।

118

वह हमें अपने पद चिन्हों पर चलने की शक्ति देगें। जैसे ही हम उस पर विश्वास करते हैं, जैसे ही हम उद्धार के दान को स्वीकार करते हैं, वैसे ही वह हमें विजयी बनने की शक्ति देगें।

119

यदि हम दान को प्राप्त करने के बाद ठोकर खाते हैं और गिर जाते हैं, तब भी वह हमें बार -बार क्षमा करेगें।

तब वह हमें विजयी होने की शक्ति देगें –कि हम अधिक और अधिक यीशु की तरफ बढ़े।

यह हमारे उद्धारकर्त्ता यीशु पर ईमानदारी, भरोसा, और विश्वास को सीखने की विकास प्रक्रिया है।

हम सिद्ध नहीं होंगे, परन्तु हम क्षमा किए जाएंगे।

शैतान अब हमारा प्रभु नहीं है।

यीशु हमारे प्रभु हैं।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

120

आप देखिए, विश्वास का अर्थ, ईमानदारी करना, भरोसा और उद्धार के दान को स्वीकार करना है वह हमारे पापों को स्वीकार करता है। वह हमारे पापों को क्षमा करता है और हमें अपने पदचिन्हों पर चलने की भी शक्ति देता है।

121

जब हम अपने हृदय के द्वार पर खटखटाने का उत्तर देते हैं और यीशु को अन्दर आने का निमंत्रण देते हैं, तो वह हमारे पापपूर्ण हृदयों को साफ कर देते हैं और हमें क्षमा कर देते हैं। वह हमें बदलने की शक्ति भी देते हैं और पाप पर विजय प्राप्त करने की शक्ति देते हैं और अधिक से अधिक उस की तरह बनने की शक्ति देते हैं।

122

और जब यीशु हमारे अन्दर रहते हैं, तो हम पूर्णरूप से यह जान सकते हैं कि हमारे पास अनन्त जीवन है।

क्या आप जानते हैं?

हमें यह चिंता करने की आवश्यकता नहीं है कि हम बचाए जाएंगे और यीशु के साथ हमेशा रहेंगे या नहीं।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

123

(मूलपाठ : १. यूहन्ना ५ : १२, १३)

"जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; और जिस के पास परमेश्वर का पुत्र नहीं; उसके पास जीवन भी नहीं है।

124

मैंने तुम्हें इसलिये लिखा है कि तुम परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो,

125

कि तुम जानो, कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।"

१. यूहन्ना ५ : १२, १३

126

यीशु चाहते हैं कि हम जाने -यहाँ और अभी -कि हमारे पास अनन्त जीवन है।

हम यहाँ और अब यह जान सकते हैं कि जब हम अपने हृदयों में यीशु को आने का निमंत्रण देते है, तब हम अपने उद्धार का आश्वासन

प्राप्त कर लेते हैं।

यीशु प्रत्येक को सब जगह निमंत्रण देते है, ताकि

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

127

(मूलपाठ : यूहन्ना ३ : १६)

"जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।"

यूहन्ना ३ : १६

संभवतः आप यह अनुभव करते हैं कि आप एक आशा रहित पापी हैं, परन्तु यह सच नहीं है परमेश्वर अत्यन्त असंभव परिस्थिति को विजय में बदल सकते है!

मसीह के लिए कोई भी जीवन इतना बुरा नहीं है। कोई भी पाप इतना बड़ा नहीं है जो क्षमा न किया जा सके!

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

128

३१, दिस्मबर, १९९५ को जान क्लेन्सी नामक एक अनुभवी योद्धा -जो न्यूयार्क शहर में रहता था आग बुझाने वाला था, वह अपने समूह को एक मेनहट्टन जिले के निचले भाग में स्थित एक जलती हुई बहुमंजिली इमारत में ले गया जब आग नियंत्रण से बाहर हो गई, तब आग बुझाने वाले सैनिक इस सोच में पड़ गए कि क्या पता कोई इस इमारत में हो, यद्यपि जो लोग उस इमारत का प्रयोग कर रहे थे वे आवारा नशीले पदार्थो के अभ्यस्त शराबी और वेश्याएँ थीं। फिर भी, क्लेंसी और उसके साथियों ने यह इरादा किया कि वे नर्क जैसे तपते हुए अग्नि -कुण्ड में खोज बचाव का अभियान संचालन करने के लिए प्रवेश करेंगे। वह इमारत धुएं से भर गई और कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। वे आग बुझाने वाले सैनिक अपने जीवन को खतरे में डाल कर उन आवारा लोगों को ढूंढ रहे थे जो इस इमारत को अल्पकाल के लिए एक घर के रूप में प्रयोग कर रहे थे अचानक दूसरी मंजिल की छत गिर गई जिस के कारण जॉन क्लेंसी फंस गया। उसके साथियों ने घबरा कर उसे प्रचण्ड़ अग्नि में से निकाला, अंत में जब उन्होंने उसे बाहर खींचा, तब बहुत देर हो चुकी थी उसका शरीर इतना जल चुका था कि वह

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

पहचाना नहीं जा रहा था। १९१५ का वह दिन उस आग बुझाने वाले बहादुर सैनिक की जिंदगी का आखिरी दिन था। उसने अपने पीछे अपनी पत्नी को छोड़ दिया था जिसके पेट में छः माह का गर्भ था और उसने भविष्य की योजना को भी पीछे छोड़ दिया था। क्लेन्सी का यह विश्वास था कि समस्त जीवन मूल्यवान है; इसलिए वह उन लोगों को बचाने के लिए खुद का जीवन खतरे में डालने के लिए तैयार हो गया था जो कि उस इमारत में थे उसने अपनी घर की सुरक्षा को उस जलती हुई आग के लिए छोड़ दिया था। वह आग में प्रवेश कर गया और अपना जीवन गवां दिया। वह एक जगह पर खड़ा न रह सका जब उसे यह पता था कि दूसरे मर रहें हैं। जब इस कहानी की बारीकियां सामने आई तब जांच करने वालों ने यह खोज की कि वह आग जानबूझ कर लगाई गई थी। एडविन स्मिथ नामक व्यक्ति जो उस इमारत में ही था, "नीचे और बाहरी" में से एक जो उस इमारत में ही था, उसने वह आग लगाई थी। परन्तु कटु सत्य यह है कि जॉन क्लेंसी जिस व्यक्ति को बचाने का प्रयत्न कर रहा था उसने ही उस इमारत में आग लगाई थी उसने अपना जीवन एक जानबूझकर आग लगाने वाले को दे दिया। यह यीशु मसीह का एक आश्चर्यजनक उदाहरण

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

है।

129

यीशु ने अपने स्वर्गीय घर की सुरक्षा को छोड़ दिया और इस दुनिया के नर्क रूपी अग्नि -कुण्ड की लौ में कूद गया। हमारा उद्धारकर्त्ता कूस पर चढ़ाया गया, और पाप की अग्नि ने उसे पूर्णतः भस्म कर दिया। जानबूझ कर अपनी पसंद के द्वारा हमने पाप किया। अपनी क्रोधी प्रवृत्ति, अपनी अनाज्ञाकारिता, अपने भोग विलास, अपने लालच, अपने झूठ बोलने के कारण हम ने इस संसार में आग लगा दी थी। मसीह मरे ताकि हम जीवित रह सकें। उसने कूस पर पाप की ज्वाला का अनुभव किया ताकि हम उस नर्क की ज्वाला का अनुभव न करें जब यीशु उस पाप को हमेशा के लिए जलाने के लिए आएगें। आज यीशु आप को यह आश्वासन देने की अभिलाषा कर रहे हैं कि आप हमेशा की जिन्दगी जी सकते हैं।

130

वह सुन रहे हैं और प्रतीक्षा कर रहे हैं। आज आप क्यों नहीं अपने हृदय का दरवाजा खोलते हैं और अन्दर आने का निमंत्रण देते हैं और उसे अपने जीवन का उद्धारकर्त्ता और प्रभु मानते हैं? वे प्रतीक्षा कर रहे हैं! वे सुन रहे है! एक चीज है जो यीशु नहीं कर सकते हैं, वह आपको अपने हृदय के दरवाजे को खोलने के लिए आपके साथ जबरदस्ती नहीं कर सकते। उसने हम में से प्रत्येक को पसन्द करने या चुनने की शक्ति दी है। हमें उन में से एक होना चाहिए जो दरवाजा खोलते हैं! यदि हम दरवाजा खोलते हैं तो वह खुशी से अन्दर आएगें! मित्र, क्या आप इसी समय ऐसा करना चाहेंगे? एक क्षण की प्रतीक्षा किए बिना आप यीशु को अपने हृदय में आने का निमंत्रण देना पसन्द करेंगे?

131

यदि ऐसा है, तो मेरे साथ प्रार्थना करिए।

132

"प्रिय परमेश्वर, मैं यह जानता हूँ कि मैं एक पापी हूँ और मुझे मदद की आवश्यकता है।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

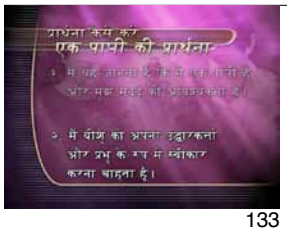

133

मैं यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता और प्रभु के रूप में स्वीकार करना चाहता हूँ।

134

मैं उनके खटखटाने का उत्तर देना चाहता हूँ और इसी समय उन्हें अपने हृदय में आने का निमंत्रण देना चाहता हूँ।

135

कृपया मेरे प्रत्येक पाप को क्षमा करें जो मैने कभी किए थे।

कृपया मेरे जीवन को पूर्णरूप से नियंत्रण करें।

136

मैं चाहता हूँ कि यीशु मेरे हृदय में आए और उसे धोकर साफ करे और फिर उसके लिए जीने में मेरी मदद करे।

मेरी प्रार्थना को सुनने और उसका उत्तर देने के लिए तेरा धन्यवाद हो, यीशु के नाम से आमीन।"